International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-06-2021, Accepted: 16-06-2021, Published: 02-07-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 01-04

"सूरजमुखी अंधेरे के" की नायिका रत्ती और आज के समाज में नारी जीवन में निहित त्रासद स्थिति: एक अवलोकन

डॉ. बिउटि दास

अध्यापिका, हिन्दी विभाग, रंगापारा कॉलेज, असम, भारत

सारांश

नारी सृष्टि की जननी, देवी, शक्ति, प्रेरणादायिनी, ममतामयी, त्यागमयी आदि सभी विभूतिओं से अलंकृत होने के बावजूद भी तथाकथित सभ्य समाज द्वारा नारी युगों-युगों से शोषित, प्रताड़ित होती आ रही है। अभी भी नारी अपनी अस्मिता की तलाश करती है। अपनी स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने के लिए अंत-बाह्य संघर्ष करने के लिए निरंतर बाध्य है। सवा सौ करोड़ भारतीय में जहाँ पचांस प्रतिशत स्त्री आज भी अपनी स्वाधिकार की लड़ाई करते है, खुले आसमान के नीचे चल-फिर की आजादी तो दूर की बात स्वप्ने भी देखना मानो घोर अभिशाप बन गए है। मुक्त रूप से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में साहस जुटा नहीं पाते है। यौन उत्पीड़न, बाहरी और आंतरिक दबाव के द्वंद्व से एक प्रकार नारी कुंठित मानसिक ग्रंथि का शिकार होने के लिए विवश हो जाती है। जीवन की तमाम विसंगतियों और विविध आयामों में नारी जीवन की त्रासद स्थिति से गुजरती हुई कृष्णा सोबती के उपन्यास "सूरजमुखी अंधेरे के" की स्त्री पात्र रत्ती की मानसिक संवेदनाओं को, आंतरिक उलझनों को, उसकी भीतर की कराह पीड़ा दुख को अनुभूति की गहराई से परखने की सफल अभिव्यक्ति उपन्यासकार ने किया है। हर गली, हर नगर, हर शहर में लाखों हजारों रत्ती आज भी मिलेंगे जिसकी स्थिति आसमान में उड़ते हुये उस पक्षी की भांति है जिसकी अचानक पंख टूट जाने पर असहाय फड़फड़ाती है। रत्ती बचपन में बलात्कार का शिकार हुई थी परंतु रत्ती की विड़म्बना यह है की वह जिंदेगी भर समाज द्वारा बलात्कार होने के लिए विवश हो जाती है, यही उसकी नियति है। रत्ती के माध्यम से आज के समाज मैं नारी जीवन मैं निहित त्रासद स्थिति का अवलोकन करना मेरे शोध पत्र का उद्देश्य है।

मूलशब्द: अंतद्न्द्व, यौन-उत्पीड़न, हीन-ग्रंथि, विद्रोही, अस्मिता।

प्रस्तावना

आज एक्कीसवीं सदी में जहाँ मानव अपनी नयी-नयी शोधों के मध्यम से हर असंभव को संभव बनाने में सक्षम हुये, विज्ञान और संसाधनों की नयी-नयी टकनीकी के माध्यम से न जाने कितने अत्याधुनिक सामग्रियाँ हमारे बीच आज उपलब्ध है जो मानव समाज की विकास गाथा में एक नयी मात्रा प्रदान करती हे। असल में मानव की जिज्ञासांए अपनी पृथ्वी पर ही परिसीमित न रहकर सौरमंडल के अन्य ग्रह-उपग्रहों में पहुँच चुका हे। समय के बदलाव के साथ-साथ हम इतने आगे बढ़ गए कि चारों ओर प्रगति ही प्रगति हो रही है, विकासशील देश के नागरिक होने के खोखले दावे तो करते है, गर्व महसूस करते है, हम डिजिटेल युग के हिस्से बने जा रहे है, क्या इतने होने के बावजूद भी हम सही मायने में आंतरिक रूप से हमारे भीतर की ऊर्जा शक्ति को बढ़ाने में सक्षम हुए? आधुनिक होने का ढोंग तो हम करते है पर अपनी मन को संकीर्णता से ऊपर उठकर समाज में नारी को मर्यादापूर्ण जीवन जीने के लिए व्यवस्थित कर पाये? "सूरजमुखी अंधेरे के" उपन्यास की नायिका रत्ती मानसिक संवेदनाओं, अंतर्द्वंद्व, अन्त-बाह्य संघर्ष, कुंठा, त्रास, अकेलापन, संकुचित भावना आदि को उपन्यासकार ने मनोवैज्ञानिक

दृष्टिकोण से परखने का प्रयास किया है। पारम्परिक लीक से हटकर लेखिका ने रत्ती के माध्यम से नवीन स्वाद दिया, नवीन संदेश दिया।

वह (रत्ती) अंधकार से घिरे रहते हुये भी प्रकाश की ओर तलाश करती है ठीक सूर्यमुखी फूल की तरह इंतेजार करती है रोशनी की। वह हरती नहीं, थकती नहीं निरंतर पूर्णता की खोज करती है। उनकी तमाम विसंगतिपूर्ण जीवन में एक प्रकार से संगति की संधान में हर पल अन्त-बाह्य संघर्ष करती हुई निरंतर वह आगे बढ़ती है।
सन १९७२ में रचित इस उपन्यास में सामंती वातावरण का प्रभाव परिलक्षित होते है। स्त्री की विडम्बना यह है कि वह अपने प्रति हुये शोषण, अत्याचार, अन्याय को विष के प्याले की तरह पीने के लिए लाचार है, विवश है। समय के प्रवाह में रत्ती के जीवन में बहुत सारे उतार-चढ़ाव आए, जीवन अस्त-व्यस्त हो गए, स्वप्ने चूर-चूर हो गए। जीवन में अचानक आए हादसे ने उसकी जीवन क्रम को इतना परिवर्तित कर देगा इसका अंदाजा रत्ती को भी नहीं थी। हाँ संभव हो सकता था कि रत्ती अपने समय के साथ अपनी पुरानी घाव को एक बुरे स्वप्ने की भांति भूल सकती थी, पर समाज के लोगों ने रत्ती से उस अवसर को भी छीन लिया, उसकी घाव को जीवन भर मिटने नहीं दिया। उसकी बचपन, वय:संधि बिलकुल टूटे-बिखरे आईने में देखे हुये प्रतिबिम्ब जैसा हो गया, वह उसको जोड़ने की असफल प्रयास भी करती है और जब वह असमर्थता का अनुभव करती है तो एक प्रकार स्वयं से संघर्ष करने लगती है। अकलेपन के अनुभव से रत्ती एक प्रकार मानसिक कुंठा का शिकार बन जाती है। अकलेपन के घनघोर क्षण में एकालाप करती हुई रत्ती एक प्रकार हीन मनोग्रन्थि से ग्रसित हो जाती है, औरों की भद्दी टिप्पणियाँ सुन-सुन कर उसकी अवचेतन मन में ये बातें बुरी तरह बैठ जाती है और वह भी खुद को नफरत करने लगती है। प्रतीकात्मक रूप से उपस्थापित इस उपन्यास में तीन सर्गों में रत्ती के जीवन प्रवाह को, चेतना को मानो सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से मनोविश्लेषण के तहत उसके अंतर्द्वंद्व को उपन्यासकार ने एक नयी मात्रा प्रदान किया है। पुल सर्ग में रीमा और केशी के मधुर दांपत्य जीवन, रीमा का बच्चे के प्रति वात्सल्य स्नेह के माध्यम से रत्ती की चेतना में भी नारी हृदय की ममत्व उद्वेलित हो उठती है और इसके परिणाम स्वरूप जो मानसिक द्वंद्व उसके बीच पनपती है उसको लेखिका ने भलीभांति दर्शाया है साथ ही रत्ती अपनी जीवन नदी में सेतु बांधने की कल्पना के अधूरीपन के एहसास को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। सुरंग सर्ग में प्रतीकात्मक रूप से रत्ती के जीवन की उस अंधकारमय स्थिति का अवलोकन है जहाँ लेशमात्र भी प्रकाश की किरण नहीं। उसकी जटिलतापूर्ण जीवन में उसकी संघर्ष, अवसाद, कुंठा, निराशा, स्वप्न भंग, अकेलापन, चिढ़चिढ़ापन के बीच में ही वह घनघोर अंधकार को चिढ़ती हुई प्रकाश की तलाश करती है, नारी अस्मिता की खोज करती है, अपनी स्वतंत्र पहचान को, स्वाधिकार, स्वाभिमान को, नारी मूल्यों की बदलती परिवेश में ढूंढने की निरंतर प्रयास करती है और उसके लिए न जाने वह कितनी विद्रोह करती है। जयनाथ राजन, सुब्रमणियम, श्रीपन्त आदि कितने पुरुष उसके जीवन में आते-जाते है लेकिन रत्ती कभी भी किसी पुरुष के आगे पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हो पाती क्योंकि ये लोग उसकी बाह्यिक सौंदर्य से आकर्षित होकर रत्ती के पास आते थे जहाँ केवल मांसल कामना की ही बू थी इसलिए रत्ती की संवेदना के स्तर को स्पर्श नहीं कर पाते थे, उसकी भीतर की जड़ता को पिघलकर स्नेह की गर्माहट से तृप्त करने में असफल ही रह जाते है। आकाश सर्ग में रत्ती के जीवन में दिवाकर नामक पुरुष के आगमन से उसकी शारीरिक और मानसिक जड़ता में परिवर्तन होने लगता है। आत्मग्रस्तता से बाहर खुली आसमान में पहली बार खुद के होने का बोध उसे होने लगती है। अपनी पूर्णता का अनुभव करती है जिसकी तलाश वह जीवन भर करती आई थी हांलाकी इसका अनुभव उसे जीवन की उत्तरार्द्ध में होती है। दिवाकर के सान्निध्य में जीवन भर पुंजीभूत नारी भावना जागृत हो उठती है। उसकी जीवन की अधूरेपन की अनुभव समाप्त होती है। जीवन में अगर कोई सही रूप से रत्ती को पहचाना तो वह है दिवाकर , वह प्यार और स्नेह के माध्यम से रत्ती की मानसिक ग्रंथि को खोलने की कोशिश करते है और उसमे वह कामयाव भी हो जाते है। आज रत्ती दिवाकर के आगे पूर्णरुपेण समर्पित है। जीवन पथ पर गतिशील रत्ती आज फिर से अकेली है लेकिन दिवाकर के सत्संग ने उसे उस पथरीली अहल्या से मुक्त किया, अभिशाप से मुक्त किया, शून्यता से मुक्त किया। आज वह सम्पूर्ण है, पूर्ण है लेकिन एक स्तर पर वह आज भी अधूरी ही है। बलात्कार एक सामाजिक शोषण है साथ ही सामाजिक व्यवहार भी शोषण की अभिन्नतम अंग है। पीड़िता रत्ती बलात्कार के द्वारा शिकार होकर पूरी जीवन असमंजस्य स्थिति में जीवन जीने के लिए विवश इसलिए होती है क्योंकि जिस समाज में वह पली-बढ़ी हुई है उस समाज के लोगों ने अनवरत उनको तिरस्कार किया, चिढ़ाया, बुरी लड़की होने की बार-बार एहसास दिलाया। चाहकर भी सहज स्वाभाविक जीवन में वह लौटकर नहीं आ पाती है जबकि जो पीड़ित है उसका मज़ाक उड़ाने की बजाय सहानुभूति दिखाने की अवश्यकता थी, जो अपराधी है समाज उन्हे खुलेयाम चलने की आजादी देते है। अपराधी के साथ मानों लोगों की कोई मतलब ही नहीं है और सारी दोष पीड़िता के ऊपर डालकर उसे जीवन भर के लिए मानसिक रूप से अपाहिज बना देते है। संभवत: इसी बजय से लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में कही पर भी उन

अपराधियों का नाम उल्लेख नहीं किया क्योंकि लेखिका का उद्देश्य अपराधियों को फटकारना, उलाहना देना, दंड देना तक सीमित नहीं है। समाज में रह कर पीड़िता की मनोदशा, उसकी सामाजिक स्थिति, लोगों की उसके प्रति रबैया, परिवार के अन्य सदस्यों का व्यवहार इन सब नकारात्मक प्रभाव से पीड़िता के मन पर जीवन भर पड़ने वाले कुंठा, निराशा, अवसाद, अकेलापन, हीन मनोग्रन्थि के प्रभाव का खुला दस्तावेज़ की उपन्यास है "सूरजमुखी अंधेरे के"।

आज भी समाज में ऐसे कितने रत्ती शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित हुई है ,कितने घिन्नौनी रूप से उसका शोषण किया जाता है जिसकी कहानी रंगते खड़े करनेवाली होती है। समाज में रहने वाले प्राय: लोगों की इस मानसिकता के कारण पीड़िता के भीतर विद्रोह करनेवाली ज्वाला अपने आप बुझ जाते हैं। हाँ ऐसा नहीं कि केवल समाज में ही वह शोषण का शिकार होती है ,उसका संघर्ष घर से लेकर प्रारम्भ होती है। इस जड़ को समाप्त करने के लिए पहले ध्यान देना होगा परिवार के भीतर की माहोल को बदलने की ,हमारी सोच में बदलाव लाने की,हमारी दृष्टिकोण को बदलने की। जब तक नारी स्वावलंबी ,शिक्षित नहीं होंगे तबतक नारी जीवन सदैव अभिशप्त बना रहेगा ,यातनाओं का कभी अन्त नहीं होगा।

टाईम्स ऑफ इंडिया के रिपोर्ट के आधार पर भारतवर्ष मैं २००७ से लेकर २०१६ तक प्रति घंटे बलात्कार की संख्या निम्नलिखित है

वर्ष	प्रति घंटे
२००७	२१
२००८	२२
२००९	२३
२०१०	२४
२०११	२६
२०१२	२८
२०१३	३५
२०१४	३९
२०१५	३७
२०१६	३९

उपर्युक्त आंकरे देख कर एक सामान्य भारतीय विचलित होना स्वाभाविक है। प्रस्तुत आंकरे सिर्फ घटनाओं के रिपोर्ट दाखिल किए गए तथ्यों के आधार पर है। ऐसे कितने अनगिनत घटनाए हमारे हर गाँव, शहर, नगर, गली में प्रतिदिन, प्रतिघण्टे हो रही इसकी जांच किया जाए तो और भी भयानक स्थिति सामने आएंगे। बलात्कार की घटनाएँ आज के स्थिति में एक सामान्य घटना बन चुका है। आज ग्लोबेल भिलेज की कल्पना हम प्रत्येक भारतीय तो करते है लेकिन दुनिया को एक गाँव बनाने की होड़ में हम कही अपनी पुरानी सुंदर छोटी सी गाँव को और हमारे सारे संस्कृति को झकझोर कर तो नहीं डाले? हम सभी भारतीय एक जुट होकर नारी के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदलना होगा और बलात्कार जैसे घृणनीय घटनाओं को उसकी जड़ से उखाड़ना होगा।

निष्कर्ष

आज के संदर्भ में रत्ती समाज के उन पीड़ित स्त्री की शक्ति है, मनोवल है, साहस का प्रतीक है। हजारों, लाखों पीड़ित स्त्री की अनुप्रेरणा है रत्ती। जिस सड़क पर चल रही है उसकी कोई छोर नहीं है जानते हुये भी वह रुकती नहीं, थमती नहीं निरंतर गतिशील रहती है,क्रियाशील बनी रहती है, जीवन से पलायन नहीं करती, भागती नहीं, अंधकार को चिढ़ती हुई आगे और आगे चलती ही रहती है। इस चलन में निश्चित रूप से लहूलुहान हो जाती है लेकिन वह प्रत्याशी है, उसे इंतेजार है अपनी आँखों में देखी हुई स्वप्नों को साकार करने की। रत्ती कभी भी किसी पुरुष वृक्ष में लता नहीं बनती है और न बनना ही कभी चाहती है, वह अपना अस्तित्व मिताती नहीं। अपनी अन्त-बाह्य संघर्ष को झेलते हुये भी स्वाधिकार, स्वतंत्र विचार विवेकपूरण ढंग से रखने में सक्षम होती है। रत्ती समाज की उन कमजोर औरत की प्रतिनिधि है जो जीवन में अनेक प्रकार से शोषित होकर एक प्रकार कुंठित हो जाती है, जीवन को ढंग से जीने का साहस खोयी हुई नारी को तथा तनावग्रस्त नारी के लिए रत्ती विरेचन का काम करती है, मन की शुद्धि करती है। समाज के द्वारा पीड़ित होते हुवे भी नारी को आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करती है तथा वह तथाकथित समाज के उन सभ्यता के आवरण ओढ़नेवाले को आगाह करती है। निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि कृष्णा सोबती के उपन्यास की नायिका रत्ती एक अनन्य नारी है। काल के प्रवाह मैं जीवन की मार्ग खोनेवाले पीड़ितों की धुँधली हुई स्वप्ने को फिर से आशा की किरण जगाती है मानो वह अमावस्या की अंधकार मैं प्रकाश की जुगनू है और दिशाहीन पीड़िता के लिए दीपशिखा के समान है।

संदर्भ सूची

1. सोबती कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के

2. डॉ सरिता चौवे, स्त्री विमर्श एवं कृष्णा सोबती
3. शारदा सारसर, कृष्णा सोबती के उपन्यास और ऐ लड़की
4. कुमार राकेश, नारी विमर्श